International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.4 March – April 2024

संजीव के उपन्यासों में चित्रित निम्नवर्गीय शोषण

डॉ. मच्छिंद्र कुंभार

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय,कडेगाव जिला - सांगली

Corresponding Author - डॉ. मच्छिंद्र कुंभार

DOI - 10.5281/zenodo.10939401

वर्तमानयुगीन मनुष्य का जीवन आज अधिक जटिल बन गया। विज्ञान, तकनीकि विकास, औद्योगिकीकरण, शिक्षा, पाश्चात्य संस्कति, वैश्वीकरण आदि के प्रभाव स्वरूप मनुष्य का जीवन गतिशील बन गया है। इस गतिशील जीवन में मनुष्य को पग-पग पर संघर्ष करना पड़ रहा है। इसी संघर्ष तथा यथार्थ की अभिव्यक्ति आज के हिंदी साहित्य में उभर कर सामने आ रही है। 'उपन्यास' गद्य साहित्य की एक ऐसी विधा है जो मनुष्य जीवन की समग्रता को चित्रित करती है। ''उपन्यास समग्र जीवन को चित्रित करनेवाली विधा है। जीवन को उसकी वास्तविकता के साथ-साथ यथार्थ अंकित करना उपन्यासकार का लक्ष्य होता है।''[1] इसी सामाजिक यथार्थ का हिस्सा है- समाज का एक निम्नवर्ग और उसका होनेवाला शोषण।

मानव समाज सदियों से विभिन्न वर्गों में विभाजित रहा है। 'व्यक्ति' समाज का एक हिस्सा है और व्यक्तियों का समूह 'वर्ग' की बुनियाद है। इस संदर्भ में भूपेंद्र सिंह लिखते हैं कि, ''वर्गों की अवधारणा समूह के सामाजिक भेद पर आधारित है।''[2] मानवी समाज अनेक वर्गों में विभाजित होता है। इस वर्ग विभाजन संबंधी अर्जुन चौहान लिखते हैं कि,'' जब समाज के एक वर्ग के व्यक्ति समाज के दूसरे वर्ग के व्यक्तियों से गुण, कर्म और व्यवहार आदि में पृथकता रखते हैं तब समाज वर्गों विभाजित दिखाई देता है।''[3]

इस आधार पर पूरे भारतीय समाज को उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग में विभजित किया जा सकता है। जातिभेद, वर्णभेद तथा मानव समाज की स्वार्थी वृत्ति ने समाज में शोषण की समस्या निर्माण की है। यह शोषण सत्ता संपन्न , अमीर, बलशाली उच्चवर्ग के द्वारा निम्नवर्ग का ही होता है। निम्नवर्ग अर्थात् समाज का ऐसा वर्ग जो आर्थिक दृष्टि से कमजोर होता है, जिसका शोषण होता हो तथा जिसका जीविका चलाने का साधन केवल श्रम ही होता है। 'हिंदी शब्दकोश' में निम्नवर्ग की परिभाषा इस प्रकार दी है-'' यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत किसान, मजदूर आते हैं।''[4]

शोषण से संबंधित दो घटक आते हैं - 1. शोषक 2. शोषित। शोषक वह है जो शोषण करता है और शोषित वह है जिसका शोषण किया जाता है। शोषक एक ऐसा वर्ग है जिसमें सामान्यतः उच्चवर्गीय अर्थात् सवर्णो (जमीदार, साहुकार, उद्योगपति, मील मालिक, धनी संपन्न लोग) का समावेश होता है। शोषित वर्ग में सामान्यतः निम्नवर्गीय घटक जैसे- मजदूर, फेरीवाले विक्रेता, पेषेवर लोग, भिखमँगे, बेकार लोग, गरीब, किसान आदियों का समावेष होता है। संजीव आधुनिक हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण प्रगतिशील कथाकार है। संजीव के उपन्यासों में कथ्य के विविध आयाम दिखाई देते हैं। संजीव का उपन्यास साहित्य शोषण के विरोध में लगाई गई चीख है। उनके उपन्यासों के प्रमुखतः से शोषण की समस्या को वाणी मिली है। जिसमें स्त्री शोषण, निम्नवर्ग का शोषण तथा आदिवासियों के शोषण को प्रमुखता मिली है। किसनगढ़ के अहेरी, सर्कस, पाँवतले की दूब, धार, सूत्रधार, जंगल जहाँ शुरू होता है, आकाष चंम्पा, रह गई दिषाएँ इसी पार और फाँस आदि उपन्यासों में निम्नवर्गीय शोषण को अभिव्यक्ति मिली है।

'किसनगढ़ के अहेरी ' यह उपन्यास पिछड़े हुए गाँवों की शोषण की भयावह स्थिति को प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास में चित्रित शोषण के संदर्भ में डॉ. विजय शिंदे कहते हैं कि, '' नवें दशक में प्रकाशित (1981) यह उपन्यास आजादी के बत्तीस-तैंतीस वर्षो के पश्चात् भारतीय शोषण परंपरा का इतिहास बनता है। हर कोई चंद रूपये, थोड़ी-सी ताकद या सत्ता के बलबुते पर 'बाप' बन जाने का एहसास जताने लगता है। ''[5] विवेच्य उपन्यास में संजीव ने निम्नवर्गीय जीवन संघर्ष और पूँजीपतियों के द्वारा निम्नवर्ग के किए जानेवाले शोषण को उजागर किया है। उपन्यास में जमीदार इनरपति सिंह का बेटा रूपई शोषक प्रवृत्ति का है। उपन्यास में उच्चवर्ग का हर एक व्यक्ति सत्ता और पैसों के बलपर निम्नवर्ग को कुचलने को तैयार है। वह निम्नवर्ग की जमीन हड़पकर निम्नवर्ग के किसान और मजदूरों का शोषण करता है। रूपई सरकारी सड़क बनवाने का ठेका लेता है। गाँव के ही गरीब, मजदूर और किसानों को काम पर लगाता है। परंतु उन्हें मजदूरी के पूरे पैसे नहीं देता। अर्थात् वह मजदूरों का आर्थिक शोषण करता है। तब सारे मजदूर काम बंद करके उसके सामने पैसों की बात करते हैं। तब पूँजीपति रूपई मजदूरों को धमकाता है। वह कहता है कि , ''काम पर सीधे तौर पर चले आओ, वरना सबकी कटवा देंगें। सरकार यहॉ हम है तुम्हारी, हम जो कहेंगे, किसनगढ़ में वही होगा।'' [6] उपर्युक्त कथन से जमीदार रूपई की शोषक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। इस तरह रूपई जैसे लोग मजदूरों को ड़रा-धमकाकर उनसे काम करवाते हैं और उनका शोषण करते हैं।

'सर्कस' संजीव का महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें निम्नवर्गीय शोषण को अभिव्यक्ति मिली है। इस उपन्यास में चित्रित शोषण के संदर्भ में डॉ. सुवासकुमार लिखते हैं कि, '' भावुकता संजीव के उपन्यास में भी है- मगर शोषण तंत्र की सही पहचान और शोषण का मुखर चित्रण इस उपन्यास की खासियत बनकर आ गए है।''[7]

संजीव के सर्कस उपन्यास में सर्कस में काम करनेवाले निम्नवर्गीय समस्याओं को चित्रित किया है। 'शोषण' प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित एक प्रमुख समस्या है। प्रस्तुत उपन्यास में सर्कस मालिक नियोगी सर्कस में आनेवाली कलाकार लड़कियो और मजदूरों का शोषण करता है। सर्कस के कलाकारों को बंधुआ मजदूरों की तरह जीवन जीना पड़ता हैं। सर्कस मालिक जानवरों से भी ज्यादा शोषण इन मजदूरों का करते हैं। उपन्यास का एक पात्र अपने शोषण को लेकर कहता है कि , '' सर्कस में आदमी को जानवर और जानवर को आदमी की तरह ट्रीट किया जाता है।''[8]उपर्युक्त कथन से शोषण की तीव्रता दिखई देती है। इसी तरह सर्कस मालिक लड़कियों का शारीरिक शोषण करते हुए दिखाई देते हैं।

'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास भी कोयला खदान में काम करनेवाले मजदूरों के शोषण एवं संघर्ष की कहानी है। उपन्यास के केंद्र में कोयला खदान में काम करनेवाले निम्नवर्गीय मजदूर हैं। विवेच्य उपन्यास में खदान के भीतर और बाहर भी खदान मालिक, सूदखोर, ठेकेदार, युनियन के गुंडे खदान मजदूरों का शारीरिक, आर्थिक तथा मानसिक शोषण करते हैं। ठेकेदार अपने पास काम करनेवाले मजदूरों की गरीबी, अज्ञान, असहायता तथा मजबुरी का फायदा उठाकर उनका शोषण करते हैं। चंदनपूर कोयला खदान में मजदूरों को काम दिलाने का कार्य दलाल तिवारी करता है। वह जबरन मजदूरों को सूद पर कर्ज देता है। खदान में काम करते समय इतवारी मियाँ की माथे पर पत्थर लगने से मौत होती है। ऐसी हालत में मजदूर इतवार मियाँ की लाश खदान से बाहर ले जाने के लिए काम बंद करते है। तभी असुरी प्रवृत्ति का शोषक तिवारी सभी मजदूरों को कहता है कि, '' सब ऊपर टैंम सिंगल हो जाएगा। यानी दो सौ ऊपर टैंम की जगह सिर्फ सौ रूपये।''9 अतः प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि तिवारी जैसे शोषक दलाल मजदूरों का आर्थिक एवं मानसिक शोषण करते हैं।

'धार' उपन्यास आदिवासियों की जीवन संघर्ष की कहानी है। विवेच्य उनप्यास में संजीव ने आदिवासियों के माध्यम से निम्नवर्ग के शोषण एवं संघर्ष की बात उठाई है। निम्नवर्ग सदियों से ही अपने अधिकारों से वंचित और शोषण से पीड़ित रहा है। उपन्यास के केंद्र में संथाल परगना के आदिवासी और निम्नवर्ग हैं। उपन्यास पूर्वाध में उच्चवर्गीय द्वारा आदिवासियों पर किया जानेवाला अन्याय-अत्याचार एवं उनके शोषण का चित्रण हुआ है। एक ओर निम्नवर्ग के मजदूर लोग अपनी दो वक्त भूख मिटाने के लिए उच्चवर्गीयों द्वारा किए जानेवाले शोषण को झेलने के लिए मजबूर है । तो दूसरी ओर यह पूँजीपति वर्ग भ्रष्ट पुलिस और प्रशासनिक व्यवस्था के साथ मिलकर मजदूरों की असहायता का फायदा उठाकर हमेशा उनका शोषण करते हैं। मजदूर कोयला खदान में कड़ी मेहनत करते हैं और कोयला निकालते हैं। परंतु इन खदानों के मालिक पूँजीपति लोग हैं। महेंद्रबाबू, ठेकेदार, माफिया, भ्रष्ट पुलिस अधिकारी और सदोष व्यवस्था इन मजदूरों का शोषण करती है। पुलिस जनता की रक्षक होती है। वही पुलिस प्रस्तुत उपन्यास में भक्षक के रूप में

दिखाई देती है। उपन्यास का एक मजदूर पात्र मंगर पुलिस के अत्याचार एवं शोषण का शिकार बनता है। पुलिस उसपर जबरन कई आरोप लगाती है। मंगर इस अन्याय और शोषण को सहने के लिए मजबूर है। मंगर खुद के और अपने माता-पिता के शोषण को प्रकट करता हुआ शर्मा बाबू से बताता है कि, ''पहली बार पकड़ा गया। उसकी समझ मे न आया कि उसने चोरी कब की । बेरहम पिटाई पर आखिर कार कुत्ते की तरह हाथ-पाँव फैला दिए उसने। जेल गया छुटा, फिर जेल...! पुलिस असली अपराधी को न पकड़ पाती या पकड़ना न चाहती तो उसे खाना पूर्ति मे डाल देती । इस तरह व्यक्तित्व गल-गलकर स्थानापन्न रहा-चोरों, जेबकतरों, गुंडों, बलात्कारियों का ..।''[10] इससे स्पष्ट होता है कि पुलिस भी निम्नवर्ग का शोषण करने में पीछे नहीं है। जो जिस तरह से बनता है इसका हर तरह से शोषण करता है। चाहे वह आर्थिक रूप से हो या शारीरिक या मानसिक।

'पाँव तले की दूब ' उपन्यास भी आदिवासी और निम्नवर्ग की समस्याओं को उभारता है। विवेच्य उपन्यास में सरकार भी औद्योगिकीकरण के नाम पर गरीब आदिवासियों को और निम्नवर्ग को उनकी जमीन से बेदखल करती है। विकास के नाम पर शोषण करती है। निम्नवर्ग के शोषण से चिंतित सुदीप्त कहता है कि, ''अगर सरकार इमानदारी से इनका हक दे दें तो एक ही छलाँग में कई मंजिले अपने आप तय हो जाती है - पर अन्याय देखो, आदिवासियों को जिनकी जमीन पर ये कारखाने लग रहे हैं , उन्हें टोटली डिप्राइव किया जा रहा है। इस संपत्ति में उनकी भागीदारी तो खत्म की ही जा रही है, उन्हें जमीन से बेदखल किया जा रहा है, मुआवजा अफसरों के पेट में !''[11]

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास ऑपरेशन ब्लैक पाइथॉन के संदर्भ में मिनी चंबल के नाम के जाननेवाले पश्चिमी चंपारण्य के बीहड़ो में चलाया गया डाकू उन्मूलन अभियान है। विवेच्य उपन्यास में संजीव ने निम्नवर्ग की शोषण की समस्या को उजागर किया है। प्रस्तुत उपन्यास के पात्र काली, बिसराम, श्यामदेव, जोगी, मलारी आदि पात्र शोषण के शिकार हैं। विवेच्य उपन्यास में काली अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी का इंतजाम करने के लिए नहर खुदाई के काम पर जाता है। परंतु पैसे माँगने पर ठेकेदार के द्वारा उसे पैसे तो नहीं दिए जाते बल्कि उसे पीटा जाता है और उसे माफी माँगने के लिए मजबूर किया जाता है। काली सोचता है कि, '' महिने भर नहर पर काम करता रहा। पैसे माँगने पर टरकाया जाता रहा और जब जिद कर बैठा तो ठेकेदार ने हाथ ही छोड़ दिया उसपर। किसी ने उसका साथ न दिया। उलटे मेठ उसी को ही भला-बुरा कहने लगा, उसे ही माफी माँगनी पड़ी। इतनी हतक !''[12] अतः प्रस्तुत अवतरण से स्पष्ट होता है कि किस तरह से जमीदार, ठेकेदार निम्नवर्ग का आर्थिक और शारीरिक शोषण करते हैं।

'रह गई दिशाएँ इसी पार' एक वैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें टेस्ट ट्यूब बेबी के बहाने जन्म, मृत्यु, ईश्वर तथा अनेक रहस्यों पर वैज्ञानिक दृष्टिकोन से बात की गई है। इस उपन्यास में जीवन, समाज और पैसों के संबंध को उजागर किया है। उपन्यास

का प्रमुख पात्र बिस्नू बिजारिया मछलियाँ सप्लाय करने के साथ-साथ पशुओं का मांस और मानव मांस का भी व्यापार करता है। साथ ही लड़कियों को बेचने का व्यापार भी। ऐसी स्थिति में शोषण क्यों नहीं होगा? असल में इसमें शोषण ही शोषण है- आर्थिक, शारीरिक, मानसिक आदि।

प्रस्तुत उपन्यास में बिस्नू बिजारिया का ट्रॉलर समुद्र में अवैध मछली पकड़ने के लिए जाता है। तब वहाँ के गरीब मछवारे उस ट्रॉलर को रोकने के लिए उनका रास्ता रोकते हैं। ट्रॉलर पर बिस्नू बिजारिया का बेटा जिम और उनकी प्रयोगशाला का एक साइंटिस्ट अजय भी है। जिम ट्रॉलर रोकता है और उन गरीब मछवारों से रास्ता रोकने का कारण पुछता है। तब गरीब मछवारों की सरदारीन बेला कहती है, '' आपके लिए मछली मारना व्यवसाय है, हमारे लिए जीने का आधार । ट्रॉलर से आप हमारे हक की मछली चुराते नहीं, उसकी आवाज से उन्हें डरा-भगा भी देते हैं, छोटी-छोटी तो तर ही जाती है, भविष्य में हमे भूखा मरना होगा। ''[13]

बेला के उपर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि व्यापारी बिस्नू बिजारिया अपने व्यापार के लिए किस प्रकार समुद्री तट पर रहने वाले निम्नवर्गीय मछवारों का शोषण करता है।

किसानी शोषण के भयानक यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाला संजीव का उपन्यास 'फाँस' हैं। जिसमें सबका पेट भरनेवाला और तन ढकनेवाला किसान खुद भूखा, नंगा और लाचार है। जिससे मजबूर होकर वह आत्महत्या करता है। इसी किसानी शोषण और किसानी आतमहत्या के ज्वलंत प्रष्न को संजीव ने ' फाँस ' के माध्यम से उजागर किया है। किसान का नाम लेते ही हमारे सामने शोषण और आत्महत्या का जीवंत यथार्थ आता है। जो आज एक भयानक समस्या बन गई है। विवेच्य उपन्यास में संजीव ने जमीदार, साहुकार, दलाल, सूदखोर , महाजन और ऋणछत्री एजेंसियाँ के द्वारा किया जानेवाले शोषण को उजागर किया है। किसान, साहुकार और महाजनों से दस प्रतिषत प्रतिमाह के ब्याज पर कर्जा लेकर खेती में फसल उगाते हैं। जब किसान धान बाजार में बेचने जाते हैं। तब वहाँ मंडी में बड़ी-बड़ी गड़बड़ियाँ होती हैं । धान या उत्पाद का मूल्य जान बुझकर गिराया जाता है। तौलने में गड़बड़ी की जाती है। उपन्यास में इस शोषण को उजागर करते हुए संजीव जी लिखते हैं कि-

'' काटा कुछ ज्यादा झुका है। '' शेतकरी कुरमुराता।

'' अरे उतने से कुछ नही होता। थोड़ा-सा नोच लिया-अब ठीक है। ''

वह क्या बोले, झुका तो अभी भी है।

'' अरे मुँह में जुबान नहीं है, बंचना है तो बेचो नहीं तो रास्ता खाली करो।''[14]

उपर्युक्त संवादों से स्पष्ट होता है कि व्यापारी किसानों का आर्थिक शोषण करते हैं। साहुकार, महाजन, दलाल, व्यापारी, किसान का हर तरह से शोषण करते ही हैं। पर सरकार भी उनका शोषण करने में पीछे नहीं हैं। उपन्यास में संजीव इस शोषण के यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं - '' नागपूर और वर्धा के बीच महान प्रोजेक्ट बन रहा है - भविष्य का सुपर मेगासिटी । न्यूयॉर्क सिटी से बड़ा!

प्रत्येक किसान परिवार को दो-दो नौकरियाँ देने का आश्वासन देकर ले ली जमीन। न नोकरी दी, न जमीन न पैसा।''[15]

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि संजीव ने अपने उपन्यास साहित्य में निम्नवर्गीय शोषण के यथार्थ रूप का अंकन किया है। जिसमें निम्नवर्गीय किसान, मजदूर उच्चवर्ग तथा शोषक वर्ग जैसे जमीदार, साहुकार, महाजन, ठेकेदार, पुलिस तथा भ्रष्ट सरकारी व्यवस्था का शिकार बना है। संजीव के उपन्यासों में शोषण का यह सिल-सिला पारिवारिक सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि स्तरों पर चलता है। जिसमें निम्नवर्ग का मानसिक, शारीरिक, आर्थिक शोषण किया हुआ दिखाई देता है। अतः संजीव ने निम्नवर्ग के शोषण के वास्तविक रूप को चित्रित कर न्मिनवर्ग की पीड़ा को ही वाणी दी है। साथ ही निम्नवर्गीय शोषण के ज्वलंत प्रश्न को समाज के सामने रखकर इस बारे में सोचने के लिए मजबूर किया है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य - डॉ. राजेंद्र खैरनार पेज नं. 41
2. मध्यवर्गीय चेतना और हिंदी उपन्यास - भूपसिंह भूपेंद्र पेज नं. 1
3. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यमवर्गीय जीवन - डॉ. अर्जुन चव्हाण पेज ने. 65
4. हिंदी साहित्य कोश - संपा. धीरेंद्र वर्मा पेज नं. 449
5. कथाकार संजीव - संपा. गिरीश काशिद पेज नं. 266
6. किसनगढ़ के अहेरी - संजीव पेज नं. 62
7. कथाकार संजीव - संपा. गिरीश काशिद पेज नं 278
8. सर्कस - संजीव पेज नं. 26
9. सावधान! नीचे आग है - संजीव पेज नं. 83
10. धार - संजीव पेज नं. 47
11. पाँवतले की दूब - संजीव पेज नं. 17
12. जंगल जहाँ शुरू होता है - संजीव पेज नं. 83
13. रह गई दिशाएँ इसी पार - संजीव पेज नं. 76
14. फाँस - संजीव पेज नं. 38
15. फाँस - संजीव पेज नं. 157